Volume-4, Issue-11, Nov-2015 • ISSN No 2277 - 8160

Research Paper Hindi

भारत में बौद्ध धर्म के पुनरुद्धार में डॉ. अम्बेडकर और राहुल सांकृत्यायन का योगदान ।

Mrs Neelam

ABSTRACT

सार - उन्नीसवीं शताब्दी में भारत में बौद्ध धर्म का पुनरुद्धार का श्रेय दो महान व्यक्तियों महापंडित राहुल सांकृत्यायन और डॉ. भीमराव अम्बेडकर को जाता है । राहुल जी को विलुप्त बौद्ध साहित्य की खोज करने का श्रेय जाता है । आज हिन्दी में अधिकांश त्रिपिटक राहुल जी की ही देन है । लेकिन बौद्ध साहित्य का तब तक कोई महत्व नही है , जब तक उनकी सुरक्षा के लिये आस्थावान बौद्ध समुदाय का अस्तित्व न हों । भारत में बौद्ध समुदाय के अभाव की पूर्ति डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर ने की । उन्होंने अपने लाखों अनुयायियों के साथ 14 अक्तूबर 1956 को बौद्धधर्म में दीक्षा ली और इस तरह भारत में बौद्ध धर्म का पुनरुद्धार किया । डॉ. अम्बेडकर और राहुल सांकृत्यायन समकालीन थे , और दोनों ने बौद्ध धर्म अपनाया । राहुल जी सनातनी साधु से आर्य समाजी और फिर बौद्ध बने और अन्त में कम्युनिस्ट हो गये , जबकि डॉ. अम्बेडकर प्रगतिशील हिन्दू रहे और बाद में उन्होंने बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया था । पर दोनों में एक समानता थी कि , दोनों विद्वान भारत में समाजवादी व्यवस्था स्थापित करने के स्वप्न द्रष्टा थे ।

Key words : बौद्ध धर्म, डॉ. भीमराव अम्बेडकर, राहुल सांकृत्यायन, पुनरुद्धार

बौद्ध धर्म भारत की श्रमण परम्परा से निकला धर्म और दर्शन है । बौद्ध धर्म अपने नैतिक एवं मानवीय मूल्यों और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के लिये विश्व भर में प्रसिद्ध है । इसीलिए प्राचीन काल में बौद्ध धर्म ने अनेक सम्राटों , राजा – महाराजाओं को प्रभावित किया , जिन्होंने सम्पूर्ण एशिया में बौद्ध धर्म की पताका फहराकर मानवता की सेवा की । कालान्तर में विभिन्न कारणों से भारत में बौद्ध धर्म लुप्तप्राय हो गया था । उन्नीसवीं शताब्दी में भारत में बौद्ध धर्म के पुनरुद्धार का श्रेय दो व्यक्तियों को जाता है , ये दो व्यक्ति हैं -- महापंडित राहुल सांकृत्यायन और डॉ. भीमराव अम्बेडकर । राहुल जी को विलुप्त बौद्ध साहित्य की खोज करने का श्रेय जाता है । उन्होंने तिब्बत की यात्रा की और वहां से 18 खच्चरों पर लादकर बौद्ध साहित्य भारत लाए, जो आज भी पटना के संग्रहालय में सुरक्षित है । यह साहित्य तिब्बती भाषा में है । जिसका उन्होंने संस्कृत और फिर हिन्दी में अनुवाद किया । आज हिन्दी में अधिकांश त्रिपिटक राहुल जी की ही देन है । लेकिन बौद्ध साहित्य का तब तक कोई महत्व नही है , जब तक उनकी सुरक्षा के लिये आस्थावान बौद्ध समुदाय का अस्तित्व न हों । भारत में बौद्ध समुदाय के अभाव की पूर्ति डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर ने की । उन्होंने अपने लाखों अनुयायियों के साथ 14 अक्तूबर 1956 को बौद्धधर्म में दीक्षा ली और इस तरह भारत में बौद्ध धर्म का पुनरुद्धार किया ।

डॉ. अम्बेडकर और राहुल सांकृत्यायन समकालीन थे , और दोनों ने बौद्ध धर्म अपनाया । राहुल जी सनातनी साधु से आर्य समाजी और फिर बौद्ध बने और अन्त में कम्युनिस्ट हो गये , जबकि डॉ. अम्बेडकर प्रगतिशील हिन्दू रहे और बाद में उन्होंने बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया था । पर दोनों में एक समानता थी कि , दोनों विद्वान भारत में समाजवादी व्यवस्था स्थापित करने के स्वप्न द्रष्टा थे । इस आलेख में हम बौद्ध धर्म के पुनरुद्धार के सम्बन्ध में दोनो विद्वानों के योगदान का अध्ययन करेंगे ।

डॉ. अम्बेडकर और राहुल सांकृत्यायन दोनों बौद्ध धर्म तक पहुंचे , पर अलग- अलग रास्तों से और अलग -अलग कारणों से । राहुल सांकृत्यायन सनातनी हिन्दू साधु (रामोदार स्वामी) के रूप में घुमैक्कडी करते हुए आर्य समाजी हो गए थे । आर्य समाजी के रूप में वे वेद और निराकार ईश्वर में सारी समस्याओं का हल देखते थे । इस सम्बन्ध में उनके विचार इस प्रकार थे " उस समय मैं आर्य समाज के गर्मदली विचारों का समर्थक था , इसके सिवाय वेद के ईश्वरीय होने में किसी की आपत्ति को मैं सहन करने को तैयार न था । वेद में रेल , तार , विमान की बातें मुझे सच्ची मालूम होती थी , यद्यपि अभी तक मैंने उनकी पूरी छानबीन न की थी ।"[1] वे आर्य समाज के सिद्धांत को ध्रुव सत्य और दयानन्द के एक-एक वाक्य को वेद वाक्य मानते थे । ये विचार 22 वर्ष के एक तरूण के थे , पर 27 वर्ष के होते-होते बौद्ध धर्म को जानने की जिज्ञासा उनमें पैदा हो गई थी । उन्हीं के शब्दों में "आर्य समाज का प्रभाव रहने से सिद्धांत में मै द्वैतवादी हो रामानुज का समर्थक रहा । इसी दार्शनिक उहा-पोह में बौद्ध दर्शन के लिये अधिक जिज्ञासा उत्पन्न हो गयी । यह जिज्ञासा और तृप्ति 34 वर्ष की अवस्था में तब पूरी हुई , जब वे (1927) लंका गए और वहां के विद्यालंकार विहार में 19 मास तक रहे । वहां उन्हें पाली त्रिपिटक में बुद्ध वचनों को पढने का अवसर मिला । इस प्रकार राहुल जी 1915 से 1927 तक आर्य समाजी रहे । पर लंका में रहते हुए ही वे बुद्ध के अनुयायी हो गये थे । उनमें तिब्बत जाकर बौद्ध साहित्य को खोज कर लाने की जिज्ञासा पैदा हो गई थी । अत: तिब्बत में सवा वर्ष बिताने के बाद , जब वे 1930 में दूसरी बार लंका गए , तो वे विधिवत उपसम्पदा लेकर बौद्धधर्म में प्रव्रेजित हो गये थे । लेकिन राहुल मार्क्सवादी दर्शन का भी इस काल में बराबर अध्ययन कर रहे थे और बुद्ध का विचार-स्वतांत्रय इस अध्ययन में उनकी सहायता कर रहा था । इसलिए उन्होंने बौद्धधर्म का द्वन्द्वात्मक अध्ययन किया और वे मार्क्सवाद की ओर मुड गए । हालांकि , बुद्ध और उनके धर्म के प्रति उनका अनुराग कभी खत्म नही हुआ, पर भिक्षु वेश उन्होंने त्याग दिया था । इसका जिक्र उन्होंने इन शब्दों में किया है -' त्रिपिटक में कुछ अधिक प्रवेश करते ही वेद , ईश्वर और आर्यसमाज ने साथ छोड दिया , मैं अनीश्वरवादी नास्तिक बन गया । बुद्ध और उनकी शिक्षाओं के प्रति मेरा अनुराग हो गया । उसके बाद तो कोई धर्म मुझे आकृष्ट नहीं कर सका । बुद्ध से अगली मंजिल पर मार्क्स मुझे मिले । भौतिकवाद मेरा दर्शन हो गया । पर, बुद्ध के मधुर व्यक्तित्व का आकर्षण मेरे मन से कभी नहीं गया। "[2]

युवा भीम अम्बेडकर की बुद्ध से पहली मुलाकात मुम्बई में हुई , जब जाने -माने लेखक ' कृष्ण अर्जुन दादा केलुस्कर ' ने उन्हें मराठी भाषा में लिखी पुस्तक ' लाइफ ऑफ द बुद्ध ' भेंट में दी । केलुस्कर युवा भीम को बडौदा के महाराज सयाजी गायकवाड से मिलवाने ले गये । आने वाले वर्षों के दौरान इस उदार और मानवीय राजकुमार ने वित्तीय सहायता , नौकरी और आखिर में न्यूयार्क की कोलम्बिया युनिवर्सिटी में पढने के लिये पूरा साथ दिया । यहां अम्बेडकर ने अपनी पहली डॉक्ट्रेट की डिग्री हासिल की और पाया कि एक समाज स्वतंत्रता , बराबरी और भाईचारे पर भी बनाया जा सकता है - वह प्रयोग जिसका अमेरिका और फ्रांस ने एक सदी से भी ज्यादा समय से अनुसरण किया है। लेकिन आरम्भिक गुरूओं और संस्थानों के असाधारण प्रभाव से ज्यादा युवा अम्बेडकर के लिये यह बुद्ध का जीवन और शिक्षा थी , जिसे केलुस्कर ने पतली किताब के रूप में दिया था और उसका सबसे ज्यादा स्थायी प्रभाव पडा । अम्बेडकर लिखते है कि ' मैंने किताब को बेहद चाव से पढा और उससे बहुत ज्यादा प्रभावित हुआ ।' आने वाले दशकों के दौरान , जैसे -जैसे उन्होंने ज्यादा अकादमिक डिग्रियां हासिल की, लंदन में कानून की पढाई की, अछूतों के नागरिक अधिकारों को लेकर आंदोलन किया, अंग्रेजों, गाँधी और कांग्रेस पार्टी के साथ अंतहीन संघर्ष किया , अम्बेडकर कभी भी व्यक्तिगत संघर्ष की सोच और सामाजिक परिवर्तन के विचार से कभी विमुख नही हुए । बुद्ध की शिक्षा हमेशा उनके साथ रही ।[3]

सन 1950 में उन्होंने यह घोषणा कर दी कि बौद्ध ही वह धर्म है जो आधुनिक समाज की जरूरतों -ज्ञान , दया और सामाजिक न्याय को पूरा करेगा , और स्वयं को पूरी तरह से बौद्धधर्म के विस्तार के लिए समर्पित कर दिया । बाद में , उन्होंने बाइबिल और कुरान की तरह बौद्धों के लिये एक धर्म ग्रंथ की रचना की जो ' द बुद्ध एंड हिज धम्म ' के नाम से प्रसिद्ध है। [4]

डॉ. अम्बेडकर धर्म को अछूतों की दृष्टि से देखते थे क्योंकि लेनिन का ये सिद्धांत कि धर्म व्यक्ति का निजी मामला होना चाहिए ये आम व्यक्ति पर तो लागू हो सकता है परन्तु विशिष्ट व्यक्ति पर नही । विशिष्ट व्यक्ति , जिससे लाखों लोग प्रेरणा लेते हों , वह धर्म को अपना निजी मामला नही बना सकता । डॉ. अम्बेडकर हिन्दू धर्म का विरोध इस आधार पर करते थे कि वह सामाजिक अलगाववाद का समर्थन करता है और मानवता के एक विशाल समुदाय को समस्त मानवाधिकारों से वंचित रखता है । वे दलितों के साथ अमानवीय व्यवहार करने की शिक्षा देने वाले हिन्दूधर्म को धर्म के नाम पर कलंक मानते थे । उनका स्पष्ट मत था कि '' हिन्दू धर्म को सुधारा नही जा सकता , उसे छोडा जा सकता है "[5] उन्होंने हिन्दूधर्म में सुधार के लिए लम्बे समय तक संघर्ष किया , पर उन्हें सफलता नही मिली और अन्तत: उन्हें हिन्दूधर्म को छोडने की घोषणा करनी पडी । उन्होंने 1935 में (15 अक्तूबर) बम्बई में यह कहा '' हमने अभी यह तय नही किया है कि हम कौन सा धर्म अपनायेंगे , पर यह हमने तय कर लिया है कि हिन्दूधर्म हमारे लिये अच्छा नही है ।'' यह निर्णय अम्बेडकर ने कवीथा कांड के प्रतिरोध में लिया था । पूना पैक्ट के तीन साल बाद यह काण्ड हुआ था । बम्बई सरकार ने उस समय सार्वजनिक स्कूलों में अछूतों के बच्चों को प्रवेश देने के आदेश जारी किये थे । 8 अगस्त 1935 को कवीथा गांव के अछूत अपने चार बच्चों को गांव के स्कूल में दाखिल करवाने के लिए ले गए । इसके विरोध में सभी हिन्दुओं ने अपने बच्चों को स्कूल से हटा लिया और रात में घात लगाकर अछूतों कि बस्ती पर डंडों , भालों और तलवारों से हमला कर दिया बाद में सभी अछूतों का सामाजिक बहिष्कार भी कर दिया । इस समय गांधी जी ने अछूतों को यह सलाह दी कि वे गांव छोड दें। इस प्रकार इस संघर्ष में अछूतों को ही दबाया गया ।6]

अम्बेडकर की घोषणा की प्रतिक्रिया में गांधी जी ने नासिक में कहा कि धर्म कोई मकान या वस्त्र नही है ,जिसे बदला जा सके , धर्म आदमी का जरुरी अंग है । इसका उत्तर डॉ. अम्बेडकर ने इन शब्दों में दिया -'' मैं गांधीजी से सहमत हूं कि धर्म जरूरी है , परन्तु मैं इस बात से सहमत नही हूं कि आदमी को अपने उस पुश्तैनी धर्म से चिपटा रहना चाहिए , जो उसके लिये घृणास्पद हो , अपमानजनक हो और उसे आगे बढने की कोई प्रेरणा न देता हो ।'' उन्होंने कहा कि इस धर्म को दलितों को छोडना ही होगा ।[7]

इस प्रकार राहुल जी जब बौद्धधर्म को अपना रहे थे तो उनके सामने उनका कोई जातीय समाज नही था , जिसे वे बदलना चाहते हो । वे ब्राह्मण थे , पर ब्राह्मणों को सुधारने या उनकी मुक्ति के (किसी कार्यक्रम के) दायित्व से मुक्त थे । किन्तु अम्बेडकर के सामने विशाल अछूत समाज था , जिसे हिन्दुओं और उनके धर्म ने मानवीय गरिमा और अधिकारों से वंचित करके रखा था । इस प्रकार दोनों बौद्ध धर्म तक पहुंचे , पर अलग -अलग रास्तों से । लेकिन दोनों इस बात को लेकर एक मत थे कि बौद्धधर्म हिन्दू धर्म का अंग नही है । राहुल जी की दृष्टि में बौद्ध हिन्दू नही थे ।' किन्तु बुद्ध के जीवन , सिद्धान्तों और दर्शन के सम्बन्ध में दोनों विद्वानों के विचार समान नही है । डॉ. अम्बेडकर ने बुद्ध के जीवन और दर्शन को उसी रूप में स्वीकार नही किया , जिस रूप में वह परम्परा में मौजूद था । किन्तु राहुल काफी हद तक परम्परा में प्रचलित बुद्ध के जीवन दर्शन को ही स्वीकार करते है । बुद्ध के गृहत्याग की कहानी पर भी राहुल जी के विचार परम्परागत है , जबकि अम्बेडकर उसको तर्क की कसौटी पर कसते है और उसके मूल में राजनैतिक कारण मानते है । उदाहरण के लिए राहुल यह मानते है कि बुद्ध ने रोगी , वृद्ध और मृतक को देखकर गृहत्याग किया था , जबकि डॉ. अम्बेडकर , इसके विरुद्ध इस मत के थे कि रोहिणी नदी के पानी को लेकर शाक्य संघ ने कोलियों ले विरुद्ध युद्ध का प्रस्ताव किया था , जिसका सिद्धार्थ गौतम द्वारा विरोध करने पर संघ ने उन्हें देश छोडने का दण्ड दिया था । राहुल जी का मत है कि गौतम ने पत्नी और बच्चे को सोता हुआ छोडकर चुपके से गृह छोडा था , जबकि अम्बेडकर इससे असहमति जताते हुए कहते है कि उन्होंने पूरी तरह अपने पिता , माता प्रजापति और पत्नी यशोधरा से सहमति और अनुमति लेकर गृह छोडा था । राहुल जी ने बुद्ध के चार सत्यों की भौतिकवादी व्याख्या करते हुए उन्हें राजाओं और धनपतियों के हित में माना था , जबकि डॉ. अम्बेडकर का कहना यह है कि बुद्ध के परिनिर्वाण के पश्चात बुद्ध -वचनों में ब्राह्मणों ने भारी हेर -फेर करते हुए उन्हें अपने अनुकूल बनाने की कोशिश की ताकि वे आम जनता के लिए दुष्कर हो जाये । राहुल जी ने एक मार्क्सवादी आलोचक के रूप में बौद्ध सिद्धान्तों की आलोचना की है । पर डॉ. अम्बेडकर इतिहास के आलोचक के साथ-साथ इतिहास के निर्माता भी थे । अत: उन्होंने धर्म की भी धर्म , अधर्म और सद्धर्म के रूपों में व्याख्या की और बुद्ध -वचनों को , जो विकृत हो चुके थे , झाड -पोंछ कर तर्क -संगत और वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान किया ।[8]

यद्यपि राहुल जी और डॉ. अम्बेडकर दोनो जाति व्यवस्था के खिलाफ थे और समाजवादी व्यवस्था कायम करना चाहते थे , परन्तु दोनों की सोच में मूलभूत अन्तर यह था कि राहुल जी के लिये वर्णव्यवस्था या जाति का मुद्दा प्रथमिकता में नही थी । वे वर्ग संघर्ष को ही समाजवादी व्यवस्था का मुख्य आधार मानते थे , जबकि डॉ. अम्बेडकर इस मत के थे कि जब तक जाति का विनाश नही हो जाएगा , तब तक कोई क्रान्ति नही हो सकती ।

दोनों विद्वानों के विचारों में असमानताएं इस कारण से है कि राहुल जी एक मार्क्सवादी आलोचक के रूप में धर्म की व्याख्या कर रहे थे , जो भारत में समाजवादी व्यवस्था स्थापित करना चाहता है । किन्तु , डॉ. अम्बेडकर इतिहास के निर्माता थे , भारत में बौद्ध धर्म का पुनरूद्धार और बौद्ध समाज का निर्माण उनकी सबसे बडी चिन्ता थी । बीसवीं शताब्दी की वैज्ञानिक विचारधारा और मार्क्सवादी आर्थिक व्याख्याओं की चुनौतियां भी उनके सामने थी । राहुल जी मनुष्य के लिये धर्म को अनावश्यक कह सकते थे , पर अम्बेडकर जो बौद्ध धर्म के पुनरुद्धारक होने जा रहे थे , धर्म को अनावश्यक कैसे ठहरा सकते थे ।[9] वे एक विशाल मानव समुदाय को अधार्मिक बनाए जाने के पक्ष में नही थे । नैतिक दृष्टि से भी किसी समुदाय का धर्म विमुख होना उसके लिये उचित नही है । वे बौद्ध धर्म को एक क्रान्ति मानते थे । उनके अनुसार ' यह उतनी ही महान क्रान्ति थी , जितनी कि फ्रांस की क्रान्ति थी ' । [10]

REFERENCES

1. राहुल सांकृत्यायन और डॉ. अम्बेडकर, कंवल भारती ,साहित्य उपक्रम , 2007 , पृ. 16 2. वही, पृ 19 3. आउटलुक, अगस्त -सतिम्बर 2012, लेखक-क्रिस्टोफर क्वीन , पृ. 34 4. वही, पृ.3 5. राहुल सांकृत्यायन और डॉ. अम्बेडकर , कंवल भारती , साहित्य उपक्रम ,2007 पृ.21 6.वही. पृ.21 7.डॉ. बाबा साहब अम्बेडकर , वसंत मून , राष्ट्रीय पुस्तक न्यास , भारत 1991, पृ. 98 8.राहुल सांकृत्यायन और डॉ, अम्बेडकर , कंवल भारती , साहित्य उपक्रम , 2007, पृ. 33 9.वही, पृ.33 10.डॉ. अम्बेडकर सम्पूरण वाड़मय , खण्ड -7 , पृ.17 सहायक ग्रंथ - 1. अम्बेडकर चतिन, प्रकाशक ; डॉ. बी. आर. अम्बेडकर सभा , हसिार , हरयािणा 2.डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर , वसंत मून ,राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, 1991